بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **19.09.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

आँहज़रत सलल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के ग़ुलामों का यह कर्तव्य है कि ईमान की जड़ों को मज़बूत करने के साथ नेक कर्मों के वे सुन्दर पत्ते, शाख़ें तथा फल बनें जो इसलाम की सुन्दरता की ओर दुनिया को खींचने वाली हो। जो दुनिया को फ़ैज़ पहुंचाने वाली हो।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न फरमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ अमले सालेह (सत्य कर्म) भी रखा है। नेक अमले सालेह उसे कहते हैं जिसमें तनिक भी फ़साद न हो। याद रखो कि इंसान के कर्मों पर सदा चोर पड़ा करते हैं। वे क्या हैं, दिखावा अर्थात जब एक इंसान दिखावे के लिए एक काम करता है। और उजुब उसे कहते हैं कि वह दिखावे का काम करके ख़ुश होता है अर्थात ऐसी ख़ुशी जो ख़ुद पसन्दी की हो। फ़रमाया- और भिन्न भिन्न पकार के दुष्कर्म तथा पाप जो वह करता है उनके कारण नेक कर्म नष्ट हो जाते हैं। आपने फ़रमाया कि दृढ़ संकल्प तथा पक्के इरादे के साथ कर्मों की ओर ध्यान देना चाहिए। पक्का तथा मज़बूत एहद करो। आपने ईमान को एक वृक्ष की संज्ञा देते हुए फ़रमाया कि ईमान जो है एक वृक्ष की भांति है और उत्तम से उत्तम वृक्ष को भी लाभ पद बनाने के लिए उसका ध्यान रखना पड़ता है तभी वृक्ष लाभ देता है, तभी जीवित रहता है जब उसका ध्यान रखा जाए। उसकी देख भाल करनी पड़ती है। इसी पकार ईमान को भी सम्पूर्ण करने के लिए सत्य कर्मों की आवश्यकता है और अपने ईमान की कर्मों के द्वारा देख भाल करने की आवश्यकता है। क्यूंकि इसके बिना ईमान के होते हुए भी अथवा ईमान का दावा करने के बावजूद इंसान मोमिन नहीं कहला सकता। कर्मों के बिना इंसान ऐसा वृक्ष है जिसकी सुन्दर एंव हरी भरी शाखें काट कर उसे भद्दा बना दिया गया हो। जिसके फलों को नष्ट कर दिया गया हो। जिसकी छांव वाली शाख़ों से ख़ुदा तआला के बन्दों को महरूम कर दिया गया हो तो ऐसी शाखों से वंचित तथा किसी भी पकार का लाभ देने से वंचित वृक्ष की ओर कोई भी नहीं देखेगा, किसी का ध्यान नहीं जाएगा।

हर एक नज़र उस सुन्दर पौधे एंव वृक्ष को देखेगी और उसकी ओर आकर्षित होगी जो हरा भरा हो, जिसकी सुन्दरता दिखाई देती हो। जो वृक्ष समय पर फूलों तथा फलों से लद जाए। जो गर्मी में साया देने वाला हो उसी को लोग पसन्द करेंगे। अतः निःसन्देह ईमान जो है वह जड़ की भांति है। निःसन्देह एक मुसलमान दावा करता है कि मेरा ईमान मज़बूत है। इसका इज़हार हम अधिकांश मुसलमानों में देखते हैं। दीन की गरिमा का भी ध्यान रखते हैं। बहुत से लाग मरने मारने के लिए भी तैय्यार हो जाते हैं। परन्तु क्या इस सुन्दर तथा लुभावने वृक्ष अथवा उस बाग़ की भांति हैं जो दुनिया को लाभ दे रहा हो? लोग इसकी सुन्दरता को देखकर इसकी ओर आकर्षित हो रहे हों। वह दीन जो हज़रत मसीह माऊद अलैहिसस्लाम लेकर आए थे उसने तो दुश्मनों को भी अपनी ओर खींचकर न केवल दोस्त बना लिया था बल्कि बड़ी मुहब्बत में गिरफ़तार कर लिया था। उन मुसलमानों का यह आदर इस लिए था कि उनके ईमान के साथ उनका हर कर्म लाभ देने वाला था। अतः केवल के ईमान के दावे तथा इसके पदर्शन और इसकी जड़ की मज़बूती की घोषणा करना किसी काम की नहीं, जब तक नेक कर्मों की हरी भरी शाखें तथा फल अपनी छटा न बिखेर रहे हों तथा फ़ैज़ (जन कल्याण) न पहुंचा रही हों। और जब यह सुन्दरता तथा लाभ देने वाली हो तो फिर दुनिया भी आकर्षित होती है तथा इसके चारों ओर एकत्र भी होती है और इनकी सुरक्षा के लिए फिर चेष्टा भी करती है। इस लिए अल्लाह तआला ने हर मुसलमान को केवल ईमान की मज़बूती के लिए नहों कहा बल्कि लगभग हर एक स्थान पर जहां ईमान का वर्णन हुआ है ईमान को सत्य कर्मों के साथ जोड़कर पतिबन्धित किया है और हालत पैदा करने के लिए अल्लाह तआला नबियों को भी भेजता है। यह हालत उस समय पैदा होती है मोमिनों में, जब ज़माने के नबी के संग, सम्बंध भी स्थापित हो। वह धर्म जिसने ग़ैर मुस्लिमों की मुहब्बत को समेटा और मुसलमान देशों की सुरक्षा के लिए ग़ैर मुस्लिम भी मुसलमानों की ओर से लड़ने के लिए तैय्यार हो गए, उसकी ऐसी दशा है कि ग़ैर मुस्लिमों को तो क्या खींचना है ख़ुद मुसलमानों की आपस की हालत नेक कर्मों की कमी के कारण **क़ुलूबुहुम शत्ता** का दृश्य पेश कर रही है। दिल इनके फटे हुए हैं। आज इन नेक कर्मों की सही तसवीर पेश करना हर अहमदी का काम है, जिसने ज़माने के इमाम और नबी को माना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम की जमाअत ही ख़ुदा तआला का लगाया हुआ वह वृक्ष है जिसकी

जड़ें शक्ति शाली तथा शाख़ें भी हरी भरी और सुन्दर तथा फलदार हैं जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता है और यह सब कुछ इस लिए है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम ने हमें वास्तविक इसलाम की शिक्षा का पकाश पदान किया है। हमें आँहज़रत सलल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम द्वारा दर्शाए गए सत्य मार्ग पर चलने की परणा दिलाई, ज़ोर दिया, ध्यान दिलाया, इसका महत्व बताया। अफ़रीक़ा में एक स्थान पर एक मस्जिद का उदघाटन हो रहा था। वहां के चीफ़ ईसाई थे, उनको भी आमन्त्रण दिया, वे भी सम्मिलित हुए। वे कहने लगे कि तुम लोगों की मुहब्बत में नहीं आया, यहां। मैं तो केवल यह देखने आया था कि इस ज़माने में ये कौन से मुसलमान हैं जिन्होंने अपनी मस्जिद के उदघाटन पर एक ग़ैर मुस्लिम और ईसाई को भी बुलाया है। यहां आकर और यह देखकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ कि यहां तो विभिन्न धर्मों के लोग उपस्थित हैं और अहमदी स्वंय भी मुसलमान होने के बावजूद ऐसे सुन्दर आचरण का पदर्शन कर रहे हैं जिसका उदाहरण नहीं मिलता। अतः ऐसे वृक्ष होते हैं जिनके बारे में क़ुरआन करीम ने फ़रमाया है कि उनकी जड़ें भी धरती में गहरी होती हैं और ईमान तथा नेक कर्मों के कारण यदि इंसानों का उदाहरण वृक्ष से दिया जाए तो उनकी हरी भरी शाख़ें भी आकाश की ऊँचाइयों को छू रही होती हैं। अतः जैसा कि मैं ने कहा कि ज़माने के इमाम के कारण हर अहमदी का कर्तव्य है कि सुदृढ़ ईमान के साथ हरी भरी शाखें बन जाए। हरी भरी शाख़ों के सुन्दर पत्ते बन जाए, उन पर लगने वाले सुन्दर फूल और फल बन जाए जो दुनिया को न केवल सुन्दर दिखाई दे बल्कि लाभ देने वाला भी हो। हर पकार के फ़सादों, झगड़ों, चुगली करने की आदतों, दूसरों का अपमान करने, रहम से ख़ाली होने, उपकार करके फिर जताने वाले लोगों में शामिल न हों बल्कि इन बातों से बचने वाले हों तथा उच्च स्तरीय नैतिकता का पदर्शन करने वाले हों। क़ुरआन करीम हमें बार बार उच्च आचरण को अपनाने तथा नेक कर्मों का सदुपदेश देता है। अल्लाह तआला तो क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि يا ايها الذين امنو لا تبطلوا صدقتكم بالمن والاذى ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो अपने अनुदानों को एहसान जताकर अथवा कष्ट देकर नष्ट न किया करो। क्यूंकि ऐसी हरकतें तो वे लोग करते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते, जिनके ईमान कमज़ोर हैं। न केवल कमज़ोर हैं बल्कि ईमान से ख़ाली हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में कई स्थानों पर विभिन्न संदर्भों से एक मोमिन को बार बार यह ध्यान दिलाया है कि ईमान के साथ सतकर्म अनिवार्य है और इसके विभिन्न लाभ हैं। अतः जहां नेक कर्मों के साथ एक मोमिन दूसरों के लिए लाभ पद वजूद बनता है वहां वह स्वंय भी इसके मीठे फल खा रहा होता है। उदाहरणत्या ईमान लाने वाले तथा सतकर्म करने वाले, इनके सम्बंध में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि ये लोग अल्लाह तआला की क्षमा शीलता पाप्त करने वाले होंगे। ये लोग वे होंगे जो जन्नतों में ऊँचे आसन ग्रहण करेंगे और फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है एक स्थान पर कि ان الذين امنو وعملوا الصلحت سيجعل لهم الرحمن وُدًّا

यक़ीनन वे लोग जो ईमान लाते हैं और जिन्होंने नेक अमल किए हैं ख़ुदाए रहमान उनके लिए वुद्द पैदा करेगा। वुद्द का अर्थ है कि गहरा प्यार और घनिष्ट सम्बंध। केवल ऊपरी मुहब्बत या प्यार नहीं, गहरा प्यार और सम्बंध। ऐसा घनिष्ट सम्बंध जो कभी कट न सके, बल्कि इस पकार का सम्बंध जिस पकार एक किल्ला ज़मीन में गाड़ दिया जाता है, मज़बूत हो जाता है। इसी पकार वह गाड़ दिया जाएगा, यह प्यार इस पकार दिल में गड़ जाए। अतः इस आयत का अर्थ यह होगा कि जो सुदृढ़ ईमान तथा सतकर्म करने वाले लोग होंगे अल्लाह तआला ऐसे मोमिनों के दिलों में अपनी मुहब्बत किल्ले की भांति गाड़ देगा। इस पकार अल्लाह तआला से मुहब्बत करने वाले होंगे और फिर वे ईमान और नेक कर्मों में और अधिक बढ़ते चले जांएगे। अतः एक वास्तविक मोमिन कभी सोच भी नहीं सकता कि वह किसी दूसरे मनुष्य को कष्ट दे। मानव जाति के साथ मुहब्बत का अर्थ यह है कि एक वास्तविक मोमिन उसे सदा फ़ैज़ पहुंचाने के पयास में रहे। जैसा कि मैं पहले भी बयान कर आया हूँ कि ये बातें यदि मुसलमानों में पैदा हो जाएं तो एक दूसरे के हक़ मारने, अत्याचार करने और अन्य लोगों को क़त्ल करने के जो काम हकूमतें भी करती हैं, तथाकथित संगठन भी करते हैं, आम लोगों में भी विद्यमान हैं, आजकल सामान्य रूप से नज़र आ रहे हैं, ये कभी नज़र न आएं। अल्लाह तआला की शिक्षानुसार कर्म ही नहीं हो रहे, इस लिए सब कुछ हो रहा है। परन्तु यह अत्याचार है कि ये ज़ुल्म अल्लाह तआला के नाम पर हो रहा है जबकि अल्लाह तआला तो कहता है कि वुद्द पैदा करो, मुहब्बत पैदा करो। ऐसी मुहब्बत पैदा करो जो दिलों में गड़ जाए। ऐसे बनो, जो दूसरों को लाभ पहुंचाने वाले हों। अतः यदि वास्तविक शिक्षानुसार अमल हो तो कभी ये दुःख और कठिनाइयां, जो दी जा रही हैं, एक दूसरे को, ये नज़र न आंए। इसलाम के छायादार वृक्ष का एक सुन्दर रूप दुनिया के सामने उभरे।

फिर इस आयत का यह अर्थ भी हो सकता है कि मानव जाति के दिल में मुसलमानों की मुहब्बत किल्ले की भांति गड़ जाए। यक़ीनन अल्लाह तआला सामर्थ्य रखता है कि ऐसा कर दे। परन्तु उसने इस बात को पाप्त करने के लिए ईमान के साथ सतकर्म की शर्त लगाई है। जैसा कि मैं ने कहा पहले मुसलामनों के लिए जो आरम्भिक युग के लिए थे। यह मुहब्बत ही थी उनके लिए लोगों के

दिलों में जो ख़ुदा तआला ने ईसाइयों के दिलों में और यहूदियों के दिलों में पैदा की थी जो मुसलमानों के इलाक़े छोड़ने पर रोते थे, वापसी की दुआएं करते थे। बल्कि इतिहास यह भी बताता है कि यहूदी यह भी कहते थे कि हम जानें दे देंगे लेकिन ईसाई सेना को नगर में पवेश नहीं करने देंगे। तुम यहीं रहो हम रक्षा करेंगे। अतः यह नेक कामों का पभाव था जो पत्येक क्षेत्र में मुसलमानों द्वारा ज़ाहिर होता था। जिसने इस सुन्दर वृक्ष की ओर दुनिया को आकर्षित किया तथा दुनिया को फ़ैज़ पहुंचाया। आज आँहज़रत सलल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के ग़ुलामों का यह कर्तव्य है कि ईमान की जड़ों को मज़बूत करने के साथ नेक कर्मों के वे सुन्दर पत्ते, शाख़ें तथा फल बनें जो इसलाम की सुन्दरता की ओर दुनिया को खींचने वाली हो। जो दुनिया को फ़ैज़ पहुंचाने वाली हो। अल्लाह तआला से मुहब्बत करने वाले भी हम हों और अल्लाह तआला की मुहब्बत पाप्त करने वाले भी हम हों। मानव जाति से पम भी हमारी पाथ्मिकता हो तथा मानव जाति का ध्यान आकर्षित करने वाले भी हम हों क्यूंकि इसके बिना हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम की बैअत में आने के लक्ष्य को पूरा करने वाले नहीं बन सकते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम ने कई बार अपने विभिन्न लेखों द्वारा, कथनों द्वारा, गोष्ठियों के द्वारा इस ओर ध्यान दिलाया है कि अपने कर्मों की ओर ध्यान करो। ऐसे कर्म करो जो नेक अमल हों जो अल्लाह तआला की इच्छानुसार हों, जो दुनिया को कठिनाइयों से बचाने वाले हों। कुछ अन्य अवतरण आपके सामने रखता हूँ। आपने एक स्थान पर फ़रमाया कि मेरी शिक्षा क्या है? और उसके अनुसार तुम्हें काम करना चाहिए। फ़रमाते हैं- हमारी जमाअत में वही दाख़िल होता ह जो हमारी शिक्षा को अपने जीवन का विधान बनाता है और अपने सामर्थ्य एंव कोशिश के अनुसार उस पर अमल करता है। लेकिन जो व्यक्ति नाम रखकर शिक्षानुसार कर्म नहीं करता वह याद रखे कि ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को एक विशेष जमाअत बनाने का निश्चय किया है और कोई आदमी जो वास्तव में जमाअत में नहीं है केवल नाम लिखवाने से जमाअत में नहीं रह सकता। उस पर कोई न कोई समय ऐसा आ जाएगा कि वह अलग हो जाएगा। इस लिए जहां तक हो सके अपने कर्मों को शिक्षा के अंतर्गत करो जो दी जाती है।

कर्म, परों की भांति हैं। बिना कर्मों के इंसान रूहानी स्तरों के लिए नहीं उड़ सकता और उन उच्च स्तरीय उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकता जो उनके नीचे अल्लाह तआला ने रखे हैं। पत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अल्लाह तआला का भय रखे और अल्लाह तआला का भय उसको बहुत सी नेकियों का वारिस बनाएगा। जो मनुष्य अल्लाह तआला से डरता है वही अच्छा है क्यूंकि उस भय के कारण उसको एक पकाश पाप्त होता है जिसके द्वारा वह पापों से बचता है। बहुत से लोग तो ऐसे होते हैं कि वे अल्लाह तआला के उपकारों और इनामों तथा सम्मानों पर विचार करके लज्जित हो जाते हैं। और उसकी अवज्ञा तथा उसके विरुद्ध काम करने से बचते हैं। परन्तु इस पकार के लोग वे होते हैं जो उसके पकोप से डरते हैं। वास्तव में बात यह है कि अच्छा और नेक तो वही है जो अल्लाह की परख में अच्छा निकले। बहुत लोग हैं जो अपने आपको धोखा देते हैं और समझ लेते हैं कि उनमें ख़ुदा का भय है। परन्तु वास्तव में ख़ुदा का भय रखने वाले वे हैं जिनका नाम अल्लाह तआला के दफ़तर में मुत्तक़ी होता है। इस समय अल्लाह तआला के नाम, ''सत्तार'' का पकाश है परन्तु क़यामत के दिन (अर्थात इस दुनिया में अल्लाह तआला सत्तारी फ़रमा रहा है) लेकिन क़यामत के दिन जब परदा दरी का पकाश होगा उस समय पूरी वास्तविकता सामने आ जाएगी। उस पकाश के समय बहुत से ऐसे भी होंगे जो आज बड़े मुत्तक़ी तथा परहेज़गार नज़र आते हैं। क़यामत के दिन वे बड़े घोर पापी दिखाई देंगे। इसका कारण यह है कि सतकर्म हमारे अपनो इच्छा और क़रारदाद से नहीं हो सकता। वास्तव में सतकर्म वे हैं जिसमें किसी पकार का कोई फ़साद न हो। फिर अमल की आवश्यकता के विषय में आप फ़रमाते हैं कि इंसान समझता है कि केवल ज़बान से कलमा पढ़ लेना काफ़ी है अथवा केवल अस्तग़फ़िरुल्लाह कह देना काफ़ी है परन्तु याद रखो ज़बानी बकवास बाज़ी काफ़ी नहीं है। चाहे इंसान ज़बान से हज़ार बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहे अथवा सौ बार तस्बीह पढ़े उसका कोई लाभ नहीं होगा क्यूंकि ख़ुदा ने इंसान को इंसान बनाया है तोता नहीं बनाया, यह तोते का काम है कि वह ज़बान से रटता रहे और समझे कुछ भी नहीं। इंसान का काम तो यह है कि जो मुंह से कहता है उसको सोचकर कहे और उसके अनुसार काम भी करे। फिर आपने फ़रमाया- अच्छी पकार याद रखो कि केवल बकवास और ज़बानी डींगें मारना कोई लाभ अथवा पभाव नहीं छोड़ता जब तक कि उसके साथ अमल न हो और हाथ पाँव तथा दूसरे अंगों के द्वारा नेक काम न किए जांए। जैसे अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ भेजकर सहाबा से ख़िदमत ली, क्या उन्होंने केवल इतना ही पर्याप्त समझा था कि क़ुरआन को ज़बान से पढ़ लिया, या उसके अनुसार अमल करना अनिवार्य समझा था? उन्होंने आज्ञापालन तथा निष्ठा दिखाई कि बकरियों की भांति गर्दनें कटवा दीं और फिर उन्होंने जो कुछ पाया और ख़ुदा तआला ने उनका जितना सम्मान किया वह छुपी हुई बात नहीं है। फ़रमात हैं- ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल और फ़ैज़ान को पाप्त करना चाहते हो तो कुछ करके दिखाओ अन्यथा बेकार चीज़ की भांति फेंक दिए जाओगे। फ़रमाते हैं- कोई आदमी अपने घर की अच्छी चीज़ों तथा सोने चाँदी को बाहर नहीं फेंक देता। इन चीज़ों को लाभ दायक तथा मूल्यवान वस्तुओं की भांति संभाल कर रखता है। लेकिन यदि घर में कोई चूहा मरा हुआ

दिखाई दे तो उसको सबसे पहले बाहर फेंक दोगे। इसी पकार ख़ुदा तआला अपने नेक बन्दों को सदा अज़ीज़ रखता है, उनकी आयु में वृद्धि करता है और उनके कारोबार में एक पकार की बरकत रख देता है। वह उनको नष्ट नहीं करता तथा अपमान जनक मौत नहीं मारता। फ़रमाया- कि ख़ुदा का वली बनना सरल नहीं बल्कि बड़ा कठिन है क्यूंकि उसके लिए बुराइयों को छोड़ना, बुरे इरादों और बुरी भावनाओं को त्यागना आवश्यक है और यह बड़ा कठिन काम है। नैतिक दुर्बलताओं तथा बुराइयों को छोड़ना कई बार बड़ा ही कठिन हो जाता है। एक अपराधी ख़ून करना छोड़ सकता है, चोर चोरी करना छोड़ सकता है परन्तु एक अनैतिक को कोध का छोड़ना कठिन हो जाता है अथवा घमंड वाले को घमंड छोड़ना कठिन हो जाता है क्यूंकि उसमें दूसरों को जो अपमान की दृष्टि से देखता है। परन्तु यह सच है कि जो ख़ुदा तआला की महानता के लिए अपने आपको छोटा बनाएगा ख़ुदा तआला उसको स्वंय बड़ा बना देगा। यह यक़ीनन याद रखो कि कोई बड़ा नहीं हो सकता जब तक कि वह स्वंय को छोटा न बनाए। फिर आपने एक बैअत करने वाले को फ़रमाया, एक नहीं बल्कि तीन लोग बैअत के लिए आए, बैअत के बाद उपदेश फ़रमाया कि आदमी को बैअत करके केवल यही न मानना चाहिए कि यह सिलसिला हक़ है और इतना मानने से उसे बरकत होती है। फ़रमाया- केवल मानने स अल्लाह तआला ख़ुश नहीं होता जब तक कर्म अच्छे न हों। कोशिश करो कि जब इस सिलसिले में दाख़िल हुए हो तो नेक बनो, मत्तक़ी बनो, पत्येक बुराई से बचो, यह समय दुआओं में व्यतीत करो। रात दिन करुणा पूर्ण रहो और जब परीक्षा की घड़ी होती है तो ख़ुदा तआला का ग़ज़ब भी भड़का हुआ होता है। ऐसे समय में दुआ, करुणा, दान आदि करो। वाणी को कोमल रखो, इस्तिग़फ़ार को अपना नियम बनाओ। नमाज़ों में दुआएं करो, केवल मानना इंसान के काम नहीं आता, यदि इंसान मानकर फिर उसे पीछे डाल दे तो उसे लाभ नहीं होता। फिर इसके बाद यह शिकायत करनी, बैअत से लाभ नहीं हुआ, बेकार है। ख़ुदा तआला केवल कह देने से ख़ुश नहीं होता। फिर सतकर्म की ओर ध्यान दिलाते हुए आपने फ़रमाया कि समझ लो कि जब तक तुममें सतकर्म न हो केवल मान लेना लाभ नहीं देता। एक वैद्य उपचार लिखकर देता है तो इससे अभिपायः यह होता है कि जो कुछ इसमें लिखा है उसको ले वह पीऐ यदि वह इन दवाओं को पयोग न करे और नुस्ख़ा लेकर छोड़े तो उसे क्या लाभ होगा। फ़रमाया- कि अब इस समय तुमने तौबा की है अब आगे ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि इस तौबा से अपने आप को तुमने कितना पवित्र किया है। अब ज़माना है कि ख़ुदा तआला तक़वा के द्वारा अन्तर करना चाहता है। बहुत लोग हैं कि ख़ुदा पर शिकवा करते हैं और अपनी मानसिकता को नहीं देखते, इंसान की अपनी मानसिकता के ही जुल्म होते हैं, अन्यथा ख़ुदा तआला रहीम व करीम है। फिर एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि- वे जो इस सिसिले में दाख़िल होकर मेरे साथ सम्बंध इरादत और मुरीदी का रखते हैं उससे उद्देश्य यह है कि ता वे नेक चलनी और नेक बख़्ती और तक़वा के उच्च स्तर तक पहंच जांए और कोई फ़साद और शरारत और बद चलनी उनके निकट न आ सके। वे पाँचों समय की नमाज़ के पाबन्द हों, वे झूठ न बोलें, वे किसी को ज़बान से कष्ट न दें, वे किसी पकार के दुष्कर्म न करें और किसी शरारत और जुल्म और फ़साद और फ़ितने का विचार भी अपने दिल में न लावें। अर्थात हर पकार के पाप और अपराध और कुकर्म और सम्पूर्ण मानसिक भावनाओं से, बुरी हरकतों से, मानकिस भावनाओं से तथा बुरी भावनाओं से बचकर रहं और ख़ुदा तआला के पाक दिल बेशर बेशर तथा ग़रीब मानसिकता बन्द हो जाएं और कोई ज़हरीला ख़मीर उनके वजूद में न रहे।

अतः ये वे उपदेश हैं जो हमें हर समय सामने रखने की आवश्यकता है। यही वे बातें हैं जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वृक्ष की हरी भरी शाख़ें बनने वाला बनाएंगी। इसी से हमारी बैअत का एहदे बैअत का उद्देश्य भी पूरा होगा। यही बातें हमें अल्लाह तआला की मुहब्बत पाप्त करने वाला भी बनाएंगी और इन्हीं नेक कर्मों के द्वारा हम दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करने वाला भी बना सकेंगे। अल्लाह तआला हमें इन वास्तविक मोमिनों में बनाए जो ईमान और सतकर्म के कारण जाने जाते हैं और अल्लाह तआला की निकटता पाप्त करने होते हैं।

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 19.09.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *OfficeAnsarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा दिनांक 14-15-16 अक्तूबर 2014 दिन मंगल, बुद्ध, जुमेरात को क़ादियान दारुलअमान में आयोजित होगा। इन्शाअल्लाह